प्रसाद और उनका आँसू

डॉ. आर.पी. वर्मा,
एसो. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

यह कवि प्रसाद की एक छोटी सी काव्य–कृति है। इसका प्रकाशन संवत् 1922 में हुआ था। इसका द्वितीय संस्करण सं0 1990 में तथा दो तीन वर्ष उपरांत अनेक संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि काव्य रसिकों के मध्य इस कृति का विशेष रुप से समादर किया गया। इसमें केवल 190 पद्य हैं। परन्तु इसकी सरसता, मार्मिकता, गहन अनुभूति और सुन्दर अभिव्यक्ति काव्य–रसिकों पर निरन्तर अपना प्रभाव डालती रही है।

कवि को सहृदय तक अपने भावों को प्रेषणनीय बनाने तथा रसानुभूति के योग्य बनाने के लिए किसी माध्यम की आवश्यकता पड़ती है। इसके बिना कवि का काव्य रचना करने का उद्देश्य अधूरा ही रहेगा। काव्यशास्त्र की परिभाषा में इस माध्यम को आलम्बन कहा जाता है। पुरातन कवियों के काव्य विषय नायक नायिका होते थे, अतः उनको अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए सहज में ही माध्यम मिल जाता था। भक्तिकाल में नायक नायिका का स्थान भक्त और उसके भगवान ने ले लिया। भक्त स्वयं कवि ही होता था। अतः उसकी रागात्मक भावों की अभिव्यक्ति भगवान के प्रति हो जाती थी। रीतिकाल में आकर राधा–कृष्ण सुमरिन एक बहाना मात्र रह गया, क्योंकि कवियों ने अलौकिक कृष्ण राधा को साधारण नायक नायिका की भांति बना दिया। अपनी कामुक वृत्तियों की अभिव्यक्ति के लिए सामाजिक कवच के रूप में कृष्ण राधा के नाम का खुला प्रयोग किया। आधुनिक काल में आकर समस्त पूर्ववर्ती परम्पराएं एकरूपता को प्राप्त हुईं। रहस्यवादी वृत्तियों को परिपक्व करने के लिए जिस साधना की आवश्यकता होती है, उनका इस काल के कवियों के पास सर्वथा अभाव है। इनके पास साधना से रहित बौद्विक चिन्तन है और चिन्तन के बल पर ही इन्होंने काव्य में ऐसे भावों की अभिव्यक्ति की हैं, जिसका चाहे लौकिक अर्थ निकाल लिया जाय चाहे अलौकिक। इसी कारण आंसू काव्य के आलम्बन का प्रश्न उपस्थित हुआ। अस्तु।

आंसू काव्य का अध्ययन करते समय अध्येता के मन में स्वतः ही यह प्रश्न उपस्थित होता है कि आंसू काव्य के वे उद्गार किसके प्रति है? वह कौन है जिसकी आड़ लेकर कवि ने ये भाव व्यक्त किये हैं। इन प्रश्नों पर विचार आलोचकों ने किया है। उनके दो वर्ग बन गये हैं एक वर्ग यह मानता है कि आंसू का आलम्बन विशुद्ध भौतिक है, वह इस लोक का ही कोई हाड़–मांस का पुलता रहा होगा। इसके ठीक विपरीत दूसरा पक्ष यह स्वीकार करके चलता है कि प्रसाद दार्शनिक है। अतः आंसू काव्य का आलम्बन भी अलौकिक है।

आंसू काव्य के आलम्बन पर विचार करने के पूर्व प्रसाद ने अपने जीवन की विभिन्न झलकियां आंसू की पूर्ववर्ती तथा परवर्ती रचनाओं में भी प्रस्तुत की हैं–

प्रणयांकुर की तरह बालिका, बालक दोनों बढ़ते थे।

क्योंकि पिता के मरने पर हम पिता–मित्र के घर रहते,

अभिभावक अब वही हमारे रखते स्नेह सहित

मुझको।

वे जाड़े की लम्बी रातें बातों में कट जाती थीं।

भद्रे! वे सब बीती बातें कैसे कहूँ गिनाऊं मैं?

प्रेमचन्द जी ने जब प्रसाद से उनकी आत्मकथा हंस में छापने के लिए मांगी तो प्रसाद जी ने आत्मकथा के स्थान पर एक कविता भेज दी जो लहर में छपी है। उसमें प्रसाद जी ने लिखा है–

उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊं मधुर चांदनी रातों की

अरे खिल खिलाकर हंसते होने वाली उन बातों की

मिला कहां वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया?

आलिंगन में आते–आते मुस्काकर जो भाग गया।

प्रसाद की इन पूर्ववर्ती और परवर्ती रचनाओं से जिन पंक्तियों को उद्धृत किया गया है वह स्पष्ट ही लौकिक आलम्बन के प्रति संकेत करती है। लहर में कवि ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि कवि को भयंकर विरह भोगना पड़ा। यही वेदना उसके काव्य में समा गई। जिसे वह स्वयं प्राणपण ये चाहता था, उसे प्राप्त न कर सका और उसका हृदय टूट गया। कवि को अपने अतीत जीवन की स्मृतियां रह–रहकर याद आतीं और उसकों संतप्त करतीं। एक समय ऐसा भी आया कि वे समस्त स्मृतियां उसके मस्तिष्क पर एक बोझ बन गई। कवि को उन्हें गोपनीय रखना कठित हो गया। अतः उनकी अभिव्यक्ति करना ही उसने श्रेयस्कर समझा–

जो घनीभूत पीड़ा थी मस्तक में स्मृति–सी छायी

दुर्दिन में आँसू बनकर वह आज बरसने आयी।

कवि के अतीत जीवन की स्मृतियां आंसू की प्रत्येक पंक्ति में मिलती हैं। उसकी यह स्मृतियां कभी वेदना को बढ़ा देती हैं, तो कभी उसके जीवन में सुख का संचार भी करती हैं। प्रियतम की छवि पर कवि आसक्त हो गया और उसे प्रथम मिलन में ही ऐसा लगा मानो वे एक–दूसरे से परिचित हैं–

मधु राका मुस्क्याती थी पहले देखा जब तुमको।

परिचित से जाने कब से, तुम लगे उसी क्षण हमको।।

कवि के नयन पट पर वह चित्र अंकित हो गया। जीवन में वह अनेकों के सम्पर्क में आया पर उसके प्रियतम की छवि तो अद्वितीय थी, इसी कारण कवि ने आंसू में उसका शिख–नख रूप में वर्णन किया है।

मैं अपलक इन नयनों से निरखा करता उस छवि को

प्रतिभा डाली भर लाता कर देता दान सुकवि को।।

कवि स्वयं ही स्वीकार करता है कि कोई उसके जीवन में आया है–

शशि मुख पर घूंघट डाले अंचल में दीप छिपाये,

जीवन की गोधूलि में कौतूहल से तुम आये।।

इन पंक्तियों को देखकर तो ऐसा भी लगता है प्रसाद की यह प्रेमिका उसकी प्रथम पत्नी ही न रही हो, क्योंकि उनका जीवन वृत्तांत बताता है कि अपने लघु जीवन में उन्हें 2 पत्नियों का वियोग सहना पड़ा था। अपरिणीता से घूंघट की आशा संभव नहीं।

जब वह प्रिय आ गया तो उसका रूप सौन्दर्य आंखों में समा गया और कवि के स्मृति पटल पर बार–बार चमत्कृत होने लगा–

घन में सुन्दर बिजली सी बिजली में चपल चमक सी,

आंखों में काली पुतली में श्याम झलक सी।।

विमुद्र सीपी सम्पुट में मोती के दाने कैसे।

है हंस न, शुक्र यह फिर क्यों चुगने को मुक्ता ऐसे?

इस प्रकार कवि ने अपने प्रियतम के अनिंद्य रूप का चित्रण किया है। वह वास्तव में उसके हृदय में समा गया। कवि ने इस रूप चित्रण में समस्त परम्परागत शैली का परित्याग कर एक नई शैली का ही आश्रय लिया है, क्योंकि इन चित्रों में एक प्रकार की लचक या मोहकता मिलती है–

बांधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से?
मणि वाले फणियों का मुख क्यों भरा हुआ हीरों से?

कवि को अनुभव हुआ कि उन काली आंखों में यौवन के मद की लाली भरी हुई है। उसे इस बात का विश्वास ही नहीं रहा कि उस मादकता में भी छलना निहित हो सकती है। इसी कारण उसने कहा है–

छलना थी, तब भी मेरा उसमें विश्वास घना था।
उस माया की छाया में कुछ सच्चा स्वयं बना था।।

कवि को इस छलना पर उस समय विश्वास हुआ जब उसने यह जाना कि यह छलना वास्तव में उसके हृदय की समस्त विभूतियों को ही लूट ले गई, तब उसको कहना पड़ा–

लहरों में प्यास भरी है, है भंवर पात्र भी खाली
मानस का सब रस पीकर लुढ़का दी तुमने प्याली।

कवि की यही वेदना जब आ आकर उसको अधिक व्यथा से भरने लगती है तो एक अजीब सी बैचैनी होने लगती है। आयु के साथ–साथ उसकी यह वेदना समष्टिगत रूप लेने लगती है, या कवि स्वयं ही उसे उस रंग में रंगने का प्रयास करने लगता है। यही कारण है कि कवि अपनी वेदना में जन–जन की वेदना का अनुभव करने लगता है और समस्त मानवता को पीड़ित दुखी समझने लगता है। यह सब क्षणिक ही होता है। उसे पुनः उस अनिंद्य सौंदर्य की याद आ जाती है और उसमें खो जाता है–

परिरम्भ कुम्भ की मदिरा निश्वास मलय के झोंके।
मुख चन्द्र चांदनी जल से मैं उठता था मुंह धोके।।

कभी कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि उसके जीवन की उलझन उसके प्रिय की अलकों के समान ही बिखरी हुई है–

मेरे जीवन की उलझन बिखरी थी उनकी अलकें।
पी ली मधु मदिरा किसने थीं बन्द हमारी पलकें?

उक्त विवेचन से तो कवि के आलम्बन के स्वरूप के विषय में ही यह कहा जा सकता है कि वह पूर्णतः लौकिक था।

आलोचकों के दूसरे वर्ग का कहना है कि कवि की आत्मा उस परमपिता परमेश्वर से मिलने के लिए युगों से छटपटाती रही और उसी कारण आंसू का आलम्बन लौकिक न होकर अलौकिक हो गया है। आत्मा सदैव ही परमात्मा के प्रति अपनी कृतज्ञता का ज्ञापन करती रही और इस कारण उसकी सुधि सदैव ही उसे बनी रही हो। आलम्बन के लिए पुल्लिग का प्रयोग इसका समर्थन करता लगता है। अपनी इच्छा के पूर्ण न होने पर आत्मा करूण क्रन्दन करने लगती है और परमात्मा से मिलने के लिए छटपटाने लगती है। कवि कहता है–

ये सब स्फुलिंग है मेरी इस ज्वालामयी जलन के
कुछ शेष चिन्ह हैं केवल मेरे उस महा मिलन के।

कवि जब उस वेदना से व्यथित होकर पुकार उठता है तो उसके कानों में उसकी प्रतिध्वनि

आकर गूंज जाती है। वह उसे परमात्मा की लीला समझकर उसके प्रति नतमस्तक हो जाता है–

आती है शून्य क्षितिज से क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
टकराती, बिलखाती, सी, पगली सी देती फेरी।

आलोचकों का कहना है कि प्रतिध्वनि का लौटना तथा महामिलन का होना ही आलम्बन के अलौकिक का द्योतक है। आत्मा परमात्मा का ही महामिलन हो सकता है, प्रेमी प्रेमिका का नहीं। प्रतिध्वनि भी लौटकर उसी समय आ सकती है जबकि परमात्मा सर्वव्यापी हो, अन्यथा नहीं। कहीं–कहीं कवि ने जन कल्याण से सम्बद्ध अपने भावों की भी अभिव्यक्ति की है। जिससे कवि के उदात्त प्रेम का पता चलता है–

निर्मम जगती को तेरा मंगलमय मिले उजाला
इस जलते हुए हृदय की कल्याणी शीतल ज्वाला।

आंसू काव्य के सम्बन्ध में एक बात यह स्पष्ट है कि प्रथम संस्करण के उपरान्त कवि ने द्वितीय संस्करण में कुछ संशोधन किया था। इस संशोधन में कवि ने लौकिक भावनाओं के ऊपर अलौकिकता का मुलम्मा चढ़ा दिया था, क्योंकि तब तक अपने अध्यवसाय तथा चिन्तन के कारण कवि काफी प्रौढ़ हो चुका था। इसके साथ ही छायावादी शैली के कारण प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया है और इन प्रतीकों के अर्थ लौकिक तथा अलौकिक दोनों ही पक्षों में निकाले जा सकते हैं।

आंसू काव्य को पढ़ने पर सहृदय के मस्तिष्क में प्रियतम का रूप, उससे मिलन तथा पारस्परिक हर्षोन्माद का चित्रण ही उभरता है। अतः इन बिरहाश्रुओं का कारण कोई प्रेमी ही है, जिसकी निष्ठुरता ने कवि के हृदय को विद्ध कर दिया था, अतः उसे आत्मा का परमात्मा के प्रति रूदन मानना सर्वथा असंगत है।

प्रसाद जी के अति निकट मित्रों तथा आत्मीयों ने उनके बारे में जो कुछ भी लिखा है, उससे भी आलम्बन के लौकिकत्व के पक्ष में ही ध्वनि निकलती है–श्री विनोद शंकर व्यास ने अपने संस्मरण के एक स्थल पर लिखा है–''प्रसाद जी की अल्हड़ जवानी में भी एक प्रेम घटना घटी थी। वह मुझे बाद में पता चली। 13 फरवरी 1936 ई0 को मैनें उनसे पूछा–आपकी रचनाओं में प्रेम का एक अज्जवल हिस्सा छिपा हुआ है, लेकिन मुझे आपने इतने दिनों में भी यह नहीं बताया कि आपकी वह अज्ञात प्रेयसी कौन थी? उन्होंने जो कुछ उत्तर दिया उसके पश्चात फिर इस सम्बन्ध में मैंने उनसे कुछ नहीं पूछा। श्री रामनाथ सुमन ने अपनी पुस्तक प्रसाद और उनकी काव्य साधना में लिखा है–आंसू जिन दिनों लिखा जा रहा था तभी मैंने इसके अनेक छन्द सुने थे। सुनकर कहा, इसमें तो आप छिप न सके, बहुत स्पष्ट हो गये। कवि हंस कर चुप रह गया।'' इससे स्पष्ट है कि आंसू काव्य का आलम्बन कोई सुन्दरी प्रेयसी ही रही होगी, जो हाड़ मांस की पुतली ही थी और जिसकी स्मृति में कवि ने सदा आंसुओं की धारा बहाई है।

आंसू काव्य में निश्चय ही वेदना की अभिव्यक्ति हुई है। कवि के मानस पटल पर जब–जब भी अपनी प्रेयसी का रूप उभरा, उसने उसके भव्य रूप का अंकन किया। उसकी वेदना का स्वर अत्यन्त ही शान्त, संयत एवं गम्भीर रहा। रामनाथ सुमन ने लिखा है–आंसू में यौवन विलास के खो जाने का रोदन है, यहां यौवन का उन्माद उतन नहीं है। यौवन का विरह है, पर यौवन का काव्य नहीं। इसका एक प्रधान कारण यह है कि वह विरह काव्य है और जीवन का जो सत्य, जो अनुभव इसमें प्रतिफलित हुआ है, उसे देख बहुत दिन हो गये हैं। पुराने प्रेम पत्रों को उलटकर देखने पर जो एक प्रकार की हसरत आंखों में आकर झांकने लगती है, जो एक व्यथा होती है और लम्बी आह निकल जाती है, यह आंसू भी वैसा ही है। बिना जलन और तड़प के टप टप मोती गिरते जाते हैं और अपने अतीत के विषाद को हमारे सामने मूर्त करते जाते हैं। नन्ददुलारे

बाजपेयी ने कहा है कि–आंसू कवि के जीवन की वास्तविक प्रयोगशाला का अविष्कार है। आंसू में कवि निस्संकोच भाव से विलासमय जीवन का वैभव दिखाता, फिर उसके अभाव में आंसू बहाता और अन्त में जीवन से समझौता करता है।

संदर्भ

1. प्रसाद और उनका आँसू – प्रो. सतीश कुमार, पृ. 48
2. पंत, प्रसाद और मैथिली शरण – रामधारी सिंह 'दिनकर', पृ. 24
3. हिंदी साहित्य का इतिहास – रामचन्द्र शुक्ल, पृ. 61
4. आँसू का पुन मूल्यांकन – डॉ. आर.पी. वर्मा, पृ. 111
5. प्रसाद निराला–अज्ञेय – रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृ. 128
6. हिंदी साहित्य का इतिहास – लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, पृ. 139
7. हिंन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास–लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, पृ. 119
8. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास – बच्चन सिंह, पृ. 138
9. जयशंकर प्रसाद – नन्द दुलारे वाजपेइ, पृ. 91
10. 10. प्रसाद की काव्य भाषा – रचना आनन्द गौड़ पृ. 149

Copyright © 2017 *Dr. R.P Verma*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.